SHIV SHAKTI

International Journal in Multidisciplinary and Academic Research (SSIJMAR)

Vol. 10, No. 2, April 2022 (ISSN 2278 – 5973)

भारतीय समाज और लोक संगीत परंपरा

डा0 शिखा ममगाई

असिसटेन्ट प्रोफेसर (संगीत)

पं0 ललित मोहन शर्मा परिसर ऋषिकेश

सार

लोक संगीत एक प्रकार का संगीत है जो मौखिक रूप से लिखे जाने के बजाय पीढ़ियों से मौखिक रूप से पारित किया जाता है। यह आमतौर पर एक विशेष संस्कृति या क्षेत्र से जुड़ा होता है, और अक्सर उस संस्कृति में कहानियां सुनाता है या महत्वपूर्ण घटनाओं का जश्न मनाता है। लोक संगीत को वाद्ययंत्रों पर गाया या बजाया जा सकता है, और इसका उपयोग मनोरंजन, कहानी कहने और सामाजिक टिप्पणी जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

लोक संगीत परंपरा एक लंबी और समृद्ध परंपरा है और यह दुनिया भर की संस्कृतियों में पाई जा सकती है। हाल के वर्षों में, लोक संगीत में नए सिरे से रुचि पैदा हुई है, और कई नए लोक संगीतकार उभर रहे हैं। यह आंशिक रूप से लोक उत्सवों और इंटरनेट की लोकप्रियता के कारण है, जिसने लोगों के लिए दुनिया भर के लोक संगीत को खोजना और सीखना आसान बना दिया है।

भूमिका

लोक संगीत परंपरा हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, और यह संगीतकारों और सभी प्रकार के कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है। लोक संगीत का इतिहास एक लंबा और समृद्ध है, जो मानव सभ्यता के शुरुआती दिनों से जुड़ा हुआ है। लोक संगीत आमतौर पर पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से पारित किया जाता है, और यह अक्सर इसे बनाने वाले लोगों की संस्कृति और इतिहास को दर्शाता है।

लोक संगीत के शुरुआती उदाहरणों में से एक होमर, इलियड और ओडिसी के प्राचीन ग्रीक महाकाव्यों में पाया जा सकता है। इन महाकाव्यों को चारणों द्वारा गाया जाता था, जो वीरों और देवताओं की कहानियाँ सुनाते हुए एक शहर से दूसरे शहर की यात्रा करते थे। भाट अक्सर अपने गीतों में सुधार करते थे, और वे अक्सर समय के साथ कहानियों को बदलते रहते थे।

आज, लोक संगीत अभी भी दुनिया भर की कई संस्कृतियों का एक जीवंत और महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह मनोरंजन, कहानी कहने और सामाजिक टिप्पणी जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा रहा है। यह इसे बनाने वाले लोगों के इतिहास और संस्कृति के बारे में जानकारी का एक मूल्यवान स्रोत भी है।

यहाँ लोक संगीत की कुछ विशेषताएं हैं

- यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से पारित किया जाता है।
- यह आमतौर पर एक विशेष संस्कृति या क्षेत्र से जुड़ा होता है।
- यह अक्सर उस संस्कृति की कहानियां सुनाता है या महत्वपूर्ण घटनाओं का जश्न मनाता है।
- इसे वाद्य यंत्रों पर गाया या बजाया जा सकता है।
- इसका उपयोग मनोरंजन, कहानी कहने और सामाजिक टिप्पणी जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

लोक संगीत के कुछ लाभ इस प्रकार हैं

- यह लोगों को उनकी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने में मदद कर सकता है।
- यह समुदाय और अपनेपन की भावना प्रदान कर सकता है।
- यह आराम और प्रेरणा का स्रोत हो सकता है।
- यह लोगों को विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने मे मदद कर सकता है।
- यह स्वयं को अभिव्यक्त करने का एक मजेदार और पुरस्कृत तरीका हो सकता है।

भारत एक समृद्ध और विविध संस्कृति वाला देश है, और इसकी लोक संगीत परंपरा इसका एक प्रमुख हिस्सा है। लोक संगीत एक प्रकार का संगीत है जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी नीचे चला जाता है, और यह अक्सर एक विशेष क्षेत्र या समुदाय से जुड़ा होता है। भारतीय लोक संगीत की विशेषता इसकी

सरल धुनों और लय के उपयोग से है, और इसके गीत अक्सर प्रेम, हानि और रोजमर्रा की जिंदगी के विषयों से संबंधित होते हैं।

भारत में कई अलग–अलग प्रकार के लोक संगीत हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी ध्वनि और शैली है।

भांगड़ा एक प्रकार का लोक संगीत है जिसकी उत्पत्ति पंजाब में हुई थी। इसकी तेज–तर्रार लय और ऊर्जावान नृत्य चाल की विशेषता है। भांगड़ा अक्सर शादियों और अन्य त्योहारों पर किया जाता है।

कथकली एक प्रकार का लोक संगीत है जिसकी उत्पत्ति केरल में हुई थी। इसकी विस्तृत वेशभूषा और श्रृंगार, और गीत और नृत्य के माध्यम से कहानी कहने के उपयोग की विशेषता है। कथकली अक्सर मंदिरों और अन्य धार्मिक उत्सवों में किया जाता है।

गरबा एक प्रकार का लोक संगीत है जिसकी उत्पत्ति गुजरात में हुई थी। यह अपने गोलाकार नृत्यों और ड्रम और झांझ के उपयोग की विशेषता है। नवरात्रि उत्सव में अक्सर गरबा किया जाता है।

बिहू एक प्रकार का लोक संगीत है जिसकी उत्पत्ति असम में हुई थी। इसकी तेज–तर्रार लय और बांस की बांसुरी के उपयोग की विशेषता है। बिहू उत्सव में अक्सर बिहू का प्रदर्शन किया जाता है।

भारतीय समाज और लोक संगीत परंपरा

भारतीय लोक संगीत भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, और यह पारंपरिक मूल्यों और विश्वासों को संरक्षित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोक संगीत मनोरंजन और सामाजिक बंधन का भी एक स्रोत है, और यह विभिन्न समुदायों और पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाने में मदद करता है।

हाल के वर्षों में, भारतीय लोक संगीत ने दुनिया भर में बढ़ती लोकप्रियता हासिल की है। यह आंशिक रूप से वैश्वीकरण के उदय के कारण है, जिसने विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के लिए एक दूसरे के बारे में सीखना आसान बना दिया है। लोक संगीत को प्रकृति और अतीत से जुड़ने के एक तरीके के रूप में भी देखा जाता है, और यह मानवीय अनुभव पर एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान करता है।

जैसे–जैसे दुनिया तेजी से आपस में जुड़ती जा रही है, भारतीय लोक संगीत सांस्कृतिक विभाजन को पाटने और समझ को बढ़ावा देने में और भी बड़ी भूमिका निभाएगा। यह एक जीवित परंपरा है

जो निरंतर विकसित और विकसित हो रही है, और यह उन सभी के लिए एक मूल्यवान संसाधन है जो भारत और इसकी संस्कृति के बारे में अधिक जानना चाहते हैं।

लोक संगीत कई कारणों से महत्वपूर्ण है। यह लोगों के लिए खुद को और अपनी संस्कृति को अभिव्यक्त करने का एक तरीका है, और यह सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है। लोक संगीत मनोरंजन और आनंद का स्रोत भी हो सकता है और यह लोगों को एक साथ लाने में मदद कर सकता है।

सदियों से लोक संगीत ने भारतीय समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका उपयोग त्योहारों को मनाने, जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को चिह्नित करने और भावनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। लोक संगीत का उपयोग अन्याय के विरोध और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए भी किया गया है।

लोक संगीत का भविष्य अनिश्चित है। दुनिया के कुछ हिस्सों में, लोक संगीत लुप्त होने के खतरे में है क्योंकि लोग लोकप्रिय संगीत में अधिक रुचि रखते हैं। हालांकि, दुनिया के अन्य हिस्सों में लोक संगीत फल–फूल रहा है। पारंपरिक संगीत में रुचि बढ़ रही है, और कई युवा लोक वाद्ययंत्र बजाना और लोक गीत गाना सीख रहे हैं।

लोक संगीत का समर्थन करना और यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि यह हमारी संस्कृति का हिस्सा बना रहे। लोक संगीत एक मूल्यवान संसाधन है जो हमें हमारे इतिहास और हमारी संस्कृति के बारे में सिखा सकता है। यह हमें प्रकृति और अतीत से जुड़ने में भी मदद कर सकता है। लोक संगीत एक जीवित परंपरा है जो विकसित और विकसित होती रहती है और यह किसी भी व्यक्ति के लिए एक मूल्यवान संपत्ति है जो दुनिया के बारे में अधिक जानना चाहता है।

भारत एक भौगोलिक रूप से विविध देश है, और यह विविधता इसकी संस्कृति में परिलक्षित होती है। नृत्य और लोकगीत हमेशा से भारतीय समाज का अभिन्न अंग रहे हैं। लोक संगीत समुदाय में विभिन्न सामाजिक और धार्मिक जुड़ावों पर आधारित है। ये लोक गीत हमें आदिम समाजों और संस्कृतियों की संस्कृति के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में भी प्रबुद्ध करते हैं।

भारतीय लोगों के जीवन में संगीत हमेशा एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता ने लोक संगीत के विभिन्न रूपों में बहुत योगदान दिया है। भारत में लगभग हर क्षेत्र का अपना लोक संगीत है, जो जीवन के तरीके को दर्शाता है। पंजाब के जोशीला भांगड़ा से लेकर

गुजरात के गरबा और कर्नाटक के भावगीत तक, भारत में लोक संगीत की परंपरा वास्तव में महान है। लोक संगीत खेती और ऐसे अन्य व्यवसायों से निकटता से जुड़ा हुआ है और कठिनाई को कम करने और नियमित जीवन की एकरसता को तोड़ने के लिए विकसित हुआ है। भले ही पॉप और रैप जैसे समकालीन संगीत के आगमन के साथ लोक संगीत ने अपनी लोकप्रियता खो दी, लेकिन कोई भी पारंपरिक त्योहार या उत्सव लोक संगीत के बिना पूरा नहीं होता है।

भारतीय लोक संगीत के प्राचीनतम अभिलेख वैदिक साहित्य में मिलते हैं। कुछ विद्वानों और विशेषज्ञों का यह भी सुझाव है कि भारतीय लोक संगीत देश जितना ही पुराना हो सकता है। उदाहरण के लिए, मध्य भारत के अधिकांश हिस्सों में लोकप्रिय लोक संगीत पांडवनी को हिंदू महाकाव्य महाभारत जितना पुराना माना जाता है। यह अविश्वसनीय दावा इस तथ्य से समर्थित है कि पांडवनी का विषय महाभारत के एक प्रमुख पात्र भीम की वीरता से संबंधित है। चूँकि पांडवनी का विषय सदियों से एक ही रहा है, यह सदियों पुराना लोक संगीत महाभारत जितना ही पुराना हो सकता है! बाद में, लोक गीतों का बड़े पैमाने पर मनोरंजक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया गया और शादियों, बच्चे के जन्म, त्योहारों आदि सहित विशेष कार्यक्रमों का जश्न मनाया गया।

भारत का अधिकांश लोक संगीत नृत्य प्रधान है। इसका मतलब यह है कि जो गाने गाए जाते हैं वे आम तौर पर कुछ नृत्य रूपों के साथ होते हैं, जो उस क्षेत्र के लिए विशिष्ट होते हैं जिसमें यह प्रदर्शन किया जा रहा है। लोक संगीत की शैली में प्रदान की जाने वाली शिक्षा की कोई निश्चित प्रणाली नहीं है। यह एक ऐसी शैली है जिसे अपनाया जाता है और उसका पालन किया जाता है और इस प्रकार लोक संगीत की परंपरा मुख्य रूप से श्रव्य रही है।

भारतीय लोक संगीत के इतिहास में बताने के लिए एक अनूठी कहानी है, क्योंकि इसने वर्षों से एक विस्तृत लचीला मेलोडिक चरित्र विकसित किया है। एक छोर से दूसरे छोर तक इसने भारत के आम आदमी के संगीत को प्रभावित किया है। इस तथ्य के बावजूद कि भारत विविध संगीत परंपराओं के साथ विभिन्न नस्लों का घर है, जनसंख्या के बीच अखंड चरित्र की अभिव्यक्ति का एक समान सांस्कृतिक तरीका देखा जा सकता है। लोक–संगीत इस व्यवस्था का अभिन्न अंग है।

भारत का लोक–संगीत मोनोफोनिक संरचनात्मक प्रणाली का पालन करता है। आधुनिक राग विधाओं के मापदण्डों के अनुसार संगीत का वर्गीकरण अधिक उपयुक्त सिद्ध होगा। प्राचीन संगीत और लोक–संगीत उनकी संबंधित तकनीकों पर आधारित हैं, जो भारतीय संगीत सिद्धांतों के माध्यम से आसानी से समझा जा सकने वाली सामान्य प्रणाली की प्रारंभिक प्रक्रियाओं के प्रारंभिक तरीकों से

प्राप्त होते हैं। यह सही है कि लोक–धुनों और रागों के बीच जोड़ने वाली कड़ी अभी तक ठीक से स्थापित नहीं हो पाई है। और ये विशेषताएं इस अनुशासन के महत्वपूर्ण पहलू हैं।

विचार विमर्श

लोक गीतों का उपयोग एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रमुख सूचनाओं को पारित करने के लिए भी किया जाता था। इससे पता चलता है कि ये गीत भारत में कागज के आने से पहले एक प्रमुख भूमिका निभा सकते थे। चूंकि लोगों के पास प्राचीन जानकारी को सुरक्षित रखने के लिए कोई ठोस सामग्री नहीं थी, इसलिए गीतों के रूप में महत्वपूर्ण जानकारी देना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया। इसलिए लोकगीतों को मूल निवासियों द्वारा सम्मान दिया जाता था क्योंकि यह न केवल मनोरंजन प्रदान करता था, बल्कि महत्वपूर्ण जानकारी भी प्रदान करता था जिसका उपयोग किसी के दैनिक जीवन में किया जा सकता था।
आदि शंकराचार्य ने देश भर में अपना संदेश फैलाने के लिए ऐसे कई गीतों का इस्तेमाल किया। इसी तरह, अन्य धार्मिक नेताओं द्वारा गाए गए लोकगीतों ने उन गांवों को पहचान दी, जहां से वे मूल रूप से आए थे और धीरे–धीरे, इन गीतों को अपने–अपने क्षेत्रों के लोगों द्वारा अपने स्वयं के रूप में संजोया और मनाया जाने लगा। साथ ही, कई लोक गीत एक नृत्य रूप से जुड़े हुए हैं, जो आमतौर पर इन गीतों को गाते समय किया जाता है। आज, लगभग हर भारतीय राज्यक्षेत्र का अपना एक लोकगीत है और उनमें से कुछ नृत्य रूप से भी जुड़े हुए हैं।

उत्तराखंडी संगीत अक्सर उत्तराखंड राज्य में त्योहारों और धार्मिक समारोहों के दौरान किया जाता है। गाने आमतौर पर प्रकृति के महत्व, ऐतिहासिक पात्रों की बहादुरी, कहानियों और राज्य की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रथाओं को व्यक्त करते हैं। इस्तेमाल किए जाने वाले संगीत वाद्ययंत्रों में मसक बाजा, दौर, थाली, रणसिंघा, दामौन, ढोलकी, ढोल, भांकोरा, हारमोनियम और तबला शामिल हैं।

टैगोर गीत के रूप में भी जाना जाता है, रवींद्र संगीत लोक गीतों का एक समूह है, जिसे प्रख्यात कवि रवीद्रनाथ टैगोर ने लिखा और सगीतबद्ध किया है। टैगोर ने अपने जीवनकाल में 2,230 से अधिक गीत लिखे, जो सभी पश्चिम बंगाल में त्योहारों और अन्य अनुष्ठानों के दौरान गाए जाते हैं। इन गीतों में शामिल विषयों में आधुनिकतावाद, मानवतावाद, संरचनावाद, प्रतिबिंब, रोमांस, आत्मनिरीक्षण, मनोविज्ञान, पुरानी यादें, तड़प आदि शामिल हैं।

नातुपुरा पाडलगल तमिलनाडु का एक प्राचीन संगीत रूप है। हालांकि कर्नाटक संगीत को दी जाने वाली प्रमुखता के कारण तमिलनाडु राज्य में लोक संगीत तेजी से गायब हो रहा है, राज्य में नातुपुरा

पाडलगल काफी महत्वपूर्ण है। भारत के कई लोक गीतों की तरह, इस लोक संगीत का भी खेती और कटाई के मौसम में आदिवासी लोगों द्वारा उपयोग किया जाता था। इसलिए नातुपुरा पाडलगल अंततः राज्य में रहने वाले कई लोगों के लिए जीवन का एक तरीका बन गया। आज भी, इस संगीतमय रूप को तमिलनाडु के कोने–कोने में सुना जा सकता है। प्रसिद्ध संगीतकार उस्ताद इलैयाराजा ने नातुपुरा पाडलगल के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि नातुपुरा पाडलगल उनकी संगीत यात्रा के पीछे की प्रेरणा थे क्योंकि वह इसी लोक संगीत को सुनकर बड़े हुए हैं, जो उनकी मां ने उन्हें गाया था।

निष्कर्ष

भारत के कई अन्य पहलुओं की तरह, सांस्कृतिक विविधता के कारण लोक संगीत भी विविध है। जबकि इसकी उत्पत्ति और उपयोग की विधि के पीछे का कारण पूरे भारत में कमोबेश एक जैसा है, जिस शैली में इसे गाया जाता है और जिस तरह से इसे माना जाता है वह अलग–अलग भारतीय राज्यों की संस्कृति के आधार पर भिन्न होता है। इनमें से कई लोक गीतों की रचना देश के विभिन्न भागों के महान कवियों और लेखकों ने की थी। उदाहरण के लिए, बंगाल का रवींद्र संगीत या टैगोर गीत गीतों का एक संग्रह है जो मूल रूप से प्रख्यात कवि रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा लिखे गए थे।

संदर्भ

- मैथिली लोकगीत लेखक – डा० योगानन्द झा उर्वशी प्रकाशन, कंकड़बाग, पटना संस्करण वर्ष – 2009
- उपाध्याय डॉ कृष्ण देव लोक संस्कृति की रूपरेखा लोक भारत प्रकाशन 2009
- परमहंस सतीश भारतीय लोकगीत सहयोग प्रकाशन 2003
- ब्रज मण्डल के लोकोत्सव लोक कल्याण एवं लोक संगीत का अध्ययन, अंजली, वनस्थली विद्यापीठ, 2017
- जीवन का अमृत ''लोकसंगीत'', डॉ. अनसूया पाठक, संगीत : सितार : गत–तोड़ा अंक, अक्टूबर 2005

- लोकसंगीत और उनकी विशेषता : डॉ. जितेन्द्र शुक्ला, संगीत पत्रिका, मार्च 2015
- लोकगीत एवं भारतीय संस्कृति की झलक : लीलावती बंसल, डायमण्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली।